नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

कुटियाट्टम् के आहार्य में प्रकृति का योगदान

डॉ. गरिमा टण्डन

अतिथि शिक्षक, भरतनाट्यम, नृत्य विभाग, भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय, लखनऊ

सार-संक्षेप

किसी मंच प्रस्तुति का प्रमुख तत्त्व जो सर्वप्रथम एक प्रेक्षक को आकर्षित करता है वह है उसमें प्रयुक्त आहार्य। उस प्रस्तुति की विधा व भाषा से अनभिज्ञ प्रेक्षक एक बार ठहर कर प्रस्तुतकर्ता के वस्त्राभरण पर अवश्य दृष्टिपात करता है। पात्रों के रमणीय वस्त्राभूषण उसे प्रस्तुति को देखने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसे ही सुन्दर, अलौकिक आहार्य से युक्त विधा है कुटियाट्टम्। भारतवर्ष के केरल प्रांत के पारम्परिक रंगमंच कुटियाट्टम् में विविध रंगों का प्रयोग एक ओर भावों को परिपुष्ट करता है तो वहीं पात्र का परिचय भी कराता है। इस विधा के आहार्य में प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग इसमें सर्वाधिक ध्यान देने की बात है। इस आलेख के माध्यम से कुटियाट्टम् के आहार्य का परिचय एवं उसमें प्रकृति के योगदान को देखने का प्रयास किया जाएगा।

मुख्य शब्द : कुटियाट्टम् नाट्य विधा, कुटियाट्टम् का आहार्य, आहार्य के प्रमुख घटक, आहार्य में प्राकृतिक तत्त्व।

शोध-पत्र

कुटियाट्टम् का परिचय

केरल प्रान्त की सर्वाधिक प्राचीन रंगमंच परम्परा कुटियाट्टम् जिसे भारत की एक मात्र जीवित संस्कृत नाट्य परम्परा होने का गौरव प्राप्त है। 2000 वर्ष प्राचीन कही जाने वाली इस परम्परा के ऐतिहासिक प्रमाण 10वीं शताब्दी में राजा कुलशेखरवर्मन के काल से उपलब्ध हैं (Kaladharan 09)। प्राचीन काल से केरल के चाक्यार, नाम्ब्यार एवं नांग्यार समुदाय के लोग इससे जुड़े हैं। चाक्यार समुदाय के पुरुष, मुख्य पुरुष पात्र की भूमिका का निर्वहण करते हैं। नांब्यार पुरुष की भूमिका थोड़ी विस्तृत होती है, वह मूल रूप से कुटियाट्टम् में प्रयुक्त प्रमुख अवनद्ध वाद्य मिळावु का वादन करते हैं साथ में नाट्य प्रस्तुति से सम्बन्धित विविध कार्य तथा पात्रों को आहार्य में सहायता भी प्रदान करते हैं। नांग्यार महिला प्रमुख स्त्री पात्र की भूमिका निभाती हैं। कुटियाट्टम् में ताल के लिए प्रयुक्त मंजीरे के समान दिखने वाले वाद्य कुळिताल का वादन भी नांग्यार महिला ही करती हैं।

कुटियाट्टम् की प्रस्तुति केरल के मन्दिरों में बने नाट्यगृह 'कुतम्बलम्' में होती है। कुतम्बलम् चौकोर या आयताकार स्थान होता है जो मंच व प्रेक्षकस्थल में विभाजित होता है। जो कई खंबों युक्त व लकड़ी की छत से ढका होता है। इसकी बनावट केरल की स्थापत्य विरासत के अनुरूप होती है जिसके माप का वर्णन 'तन्त्रसामुच्य' एवं 'शिल्परत्न' नामक ग्रंथों में मिलता है (Gopalkrishnan 20)। मंच, प्रेक्षकस्थल से थोड़ी ऊँचाई पर होता है। प्रेक्षकस्थल मात्र खाली जगह होती है जहाँ प्रेक्षक बैठते हैं। मंच के पीछे की ओर नेपथ्यगृह होता है। प्रस्तुति के पूर्व भद्र दीप जलाया जाता है जो मंच पर प्रकाश व्यवस्था के लिए उपयुक्त है। दीप की रोशनी में पात्रों का आहार्य और भी ओजस्वी प्रतीत होता है। मंच को नारियल के पत्तों, फल, विविध पुष्प आदि से सुसज्जित किया जाता है।

कुटियाट्टम् का आहार्य

कुटियाट्टम् एक बहुत प्राचीन परम्परा है। इस परम्परा के आहार्य में केरल की विविध लोक और शास्त्रीय परम्पराओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है जिनमें सर्वाधिक प्रभाव कथकली के आहर्य का है। इस सन्दर्भ में मत मिलता है कि इस परम्परा के पतन के साथ इससे जुड़े समस्त तत्त्वों का ह्रास होना प्रारम्भ हुआ अतः इसके पुनरुत्थान हेतु आहार्य के सन्दर्भ में केरल की नृत्य परम्परा कथकली के आहार्य पर विचार किया गया। जिस कारण कुटियाट्टम् नाट्य परम्परा का आहार्य काफी कुछ कथकली के समान दिखता है (Somdas 125)। कुटियाट्टम् में वेशभूषा की दृष्टि से सभी पात्र एक आधारभूत विन्यास से बंधे होते हैं जो कुछ अंशों से कथकली से सदृश होते हुए भी अपना एक अलग विशिष्ट स्वरूप रखता है (वात्स्यायन 25)।

कुटियाट्टम् में जिन वेशभूषाओं का उपयोग किया जाता है उनके लिए 'अणियलम्' अथवा 'अणिजालम्' शब्द का उपयोग किया जाता है (Kaladharan 22) । आहार्य मुखसज्जा-वस्त्राभूषण एवं पुस्त से पूर्ण होता है। कुटियाट्टम् में प्रयुक्त आहार्य बहुत ही अद्भुत होता है। विविध आकृति के मुकुट, मुख पर भिन्न-भिन्न रंग व सुन्दर आकृतियाँ, मस्तक पर भिन्न प्रकार के तिलक, आँखों का रक्त वर्ण, साथ में सुनहरे आभूषण पात्रों को विशेष प्रकार का सौन्दर्य प्रदान करते हैं। कुटियाट्टम् में आंगिक व वाचिक अभिनय का प्रचुरता से उपयोग किया जाता है परन्तु उसको

पुष्ट एवं आकर्षक बनाने का कार्य आहार्य का है। कुटियाट्टम् में विविध पात्रों के लिए अलग-अलग वेशभूषा का उपयोग नहीं होता अपितु पात्रों की विशेषताओं के आधार पर आहार्य प्रयुक्त होता है जिसे 'वेश' कहते हैं। जो इस प्रकार हैं–पच्च, कत्ति, करी, ताडी, पळुक्क, मिनुक्कु एवं विदूषक। पात्र के गुण व लक्षणों के आधार पर उनका वेश निर्धारित होता है (Gopalkrishnan 80-81)।

पच्च वेश–उच्च कुल में जन्में एवं शांत, सज्जन, सौम्य अर्थात् उदात्त पुरुष पात्र जैसे श्रीराम, श्रीलक्ष्मण आदि का वेश कहलाता है 'पच्च'। इसमें मुख पर हरे रंग का उपयोग किया जाता है।

कत्ति वेश–रावण जैसे उच्च कुल में जन्मे परन्तु स्वभाव से धृष्ट पात्रों का वेश है 'कत्ति'। इसमें मुख पर हरे रंग के साथ लाल रंग से आकृति बनाई जाती है।

दानवी सूर्पनखा के लिए प्रयुक्त वेश है 'करी'। इसमें काले रंग का उपयोग किया जाता है।

ताड़ी वेश–यह वेश राक्षसी पात्र या पशु प्रवृत्ति वाले पात्र जैसे हनुमान, सुग्रीव, बालि के लिए उपयुक्त है। इसमें अलग रंगों की दाढ़ी का उपयोग किया जाता है। हनुमान की सफेद, सुग्रीव की काली एवं बालि की लाल रंग की दाढ़ी होती है। दाढ़ी तेच्चिप्पूव (तेछि के फूल), कपास तथा सन की रस्सियों से बनाई जाती हैं।

पळुक्क वेश–लाली युक्त नारंगी रंग 'पळुप्प' वेश में मुख पर उपयोग किया जाता है। यह वेश भीम का है। इसमें भी लाल रंग की दाढ़ी का उपयोग होता है। विद्वानों के मतानुसार सूत्रधार, ऋषिकुमार, व समवर्ण पळुक्क वेश के पात्र हैं।

मिनुक्कु वेश–स्त्री पात्र, नारद, सूत, सूत्रधार, जाम्वन्त 'मिनुक्कु' वेश धारण करते हैं। मुख पर पीले रंग का उपयोग किया जाता है। विविध मतानुसार सूत, नारद व जाम्वन्त घी वेश का प्रयोग करते हैं।

विदूषक–हास्य चरित्र विदूषक का वेश अलग ही होता है। वह मुख पर सफेद रंग का उपयोग करता है। जिस पर काले रंग से हास्य उत्पन्न करने वाली मूंछ की आकृति बनाई जाती है। और नाक एवं गाल पर लाल रंग के गोले बनाए जाते हैं।

कलाकारों के वेश विन्यास का आरम्भ शुद्धिकरण स्नान से होता है। स्नान के उपरान्त नट अपने सिर पर एक लाल कपड़े का टुकड़ा बांधते हैं जिसे 'चोप्पुतुणि' कहा जाता है। इसे प्रस्तुति के उपरान्त ही उतारा जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस लाल कपड़े को बांधने से खोलने तक की अवधि में उस कलाकार पर ईश्वर का आशीष रहता है–यहाँ तक कि उसके करीबी रिश्तेदारों की मृत्यु भी उसे अपवित्र नहीं कर सकती (Somdas 123)।

अ-मुखसज्जा

विविध वेशों की मुखसज्जा में रंगों का उपयोग किया जाता है। वे सभी रंग प्रकृति में उपलब्ध खनिज एवं खाद्य पदार्थों से प्राप्त किए जाते हैं। मुख्य रंग हैं–पीला, काला एवं लाल। पीला रंग खनिज 'मनयोल' से या हल्दी से, लाल रंग खनिज 'चायिल्यम्' या रेड ऑक्साइड से तथा काला रंग कोयले के चूर्ण से या दीप आदि के जलने पर प्राप्त धुएँ की कालिक से प्राप्त रंग होता है।

'मनयोल' जिसे संस्कृत में हरताल (Orpiment आर्सेनिक सल्फाइड) एवं 'चायिल्यम्' जिसे संस्कृत में हिंगुल (Cinnabar/ मर्करी सल्फाइड) कहा जाता है, प्राकृतिक खनिज हैं। आयुर्वेद में इनकी भस्म के बहुत से चिकित्सीय लाभ बताए गए हैं। दोनों खनिजों का शुद्धिकरण करने के उपरान्त ही इनको घिस कर चूर्ण प्राप्त किया जाता है। शुद्धिकरण के उपरान्त ये खनिज विषैले प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं एवं विविध रोगों के साथ त्वचा के रोगों में भी असरदायक होते हैं (Rawat 91; Patel 34)। इससे यह स्पष्ट होता है कि ये खनिज तवचा के लिए हानिकारक नहीं होते।

लाल रंग के लिए चायिल्यम्, पीले रंग के लिए मनयोल एवं नीले रंग के लिए नीलम को घिस कर चूर्ण बनाया जाता है। यह पदार्थ प्राकृतिक होते हैं जिस कारण इन्हें पूर्व में घिस कर नहीं रखा जा सकता अतः यह कार्य प्रस्तुति के पूर्व ही नेपथ्यकर्म के आरम्भ के साथ किया जाता है (Jose 06)। तदुपरान्त लाल एवं पीले रंग के मिश्रण से नारंगी, पीले एवं नीले रंग में के मिश्रण से हरा रंग बनाते हैं। इन रंगों के चूरे की निश्चित मात्रा को नारियल के खोल में नारियल के तेल या गाय के घी में मिला के मुख पर कूची से लगाते हैं। इन सभी खनिज को घिसने का कार्य प्रस्तुति के पूर्व ही आरम्भ किया जाता है अर्थात् खनिज के चूर्ण को संग्रहित नहीं किया जा सकता। इन रंगों का उपयोग पच्च, कत्ति एवं पळुक्क वेश में किया जाता है। इनके साथ सफेद रंग का भी उपयोग किया जाता है जो चावल के आटे के घोल या जिंक ऑक्साइड से प्राप्त होता है।

विदूषक वेश में मुख पर चावल के आटे के घोल से लकीरें बनाते हैं, काले रंग से आँखें व भवें बनातं हैं, मस्तक-कपोल-नासिका एवं चिबुक पर लाल रंग के गोले बनाए जाते हैं और काले रंग से अधरों के ऊपर एक हास्यकारक मूंछ बनाई जाती है।

करी वेश में मुख को काले रंग से रंगा जाता है, अधरोष्ठ को लाल रंग से बड़ा किया जाता है और मस्तक-कपोल-नासिका एवं ठुड्डी पर त्रिशूल की आकृति बनाई जाती है।

सर्वप्रथम 'चोप्पु तुन्नि' बांधने के उपरान्त आँखों व भवों को काले रंग से बड़ा किया जाता है, मस्तक पर पात्र के लिए निर्धारित तिलक बनाया जाता है जिसे 'कुरी' कहते हैं। तिलक में 'U', 'V', 'ψ' आदि ऐसी आकृतियों को बनाया जाता है, अधरोष्ठ को लाल रंग से बड़ा किया जाता है। अधरोष्ठ पर लाल रंग का उपयोग किया जाता है जो पिसी हल्दी में चूना मिला कर प्राप्त होता है।

तदुपरान्त मुख पर पात्रानुसार रंग भरा जाता है तथा तिलक व मुख पर बनी आकृतियों को चावल के आटे के घोल से उभारा जाता है। इसके उपरान्त पच्च व कत्ति वेश की 'चुट्टि' बनाई जाती है। यह चावल के आटे

के घोल से बनाई जाती है जो भावाभिव्यक्ति में उपयोगी होती है। इसे लगाने के लिए कलाकार को लेटा कर दोनों कानों के मध्य में चावल के आटे के घोल की परतें लगाई जाती हैं जो सूखने के उपरान्त मुख सज्जा को आकर्षित बना देती है। यह कुटियाट्टम् के आहार्य का विशिष्ट अंग है। करी एवं पळुक्क तथा ताडी वेश के कुछ पात्रों की चुट्टि नहीं बनाई जाती। चुट्टि बनाने में बहुत समय व धैर्य की आवश्यकता होती है। कत्ति आदि वेशों में नाक एवं मस्तक पर 'पूव्' अर्थात् 'चुट्टि' के मांड (माड़) से बना नुकीला एवं गोलाकार आभूषण धारण किया जाता है।

तदुपरान्त आँखों में चुण्ड पुष्प (चुण्डुप्पूवु) के बीज को रखा जाता है। इस बीज को अच्छे से घिस कर घी में रखते हैं फिर आँख में डाल कर आँखों को घुमात हैं जिससे आँखों में लालिमा आती है। आँखों का यह लाल रंग नेत्राभिनय को पुष्ट करता है।

आ-वेश विन्यास

कुटियाट्टम् का वेश विन्यास बहुत जटिल होता है। जिसके अन्तर्गत 'पोयनख, कुप्यम् या कौपीन, माट्ट, उत्तरीय' आते हैं। 24 फीट लम्बे कपड़े को फैन की तरह कर के डोरी की मदद से कमर पर पीछे की ओर बाँधा जाता है। पोयनख या पोयतक नीचे पैर तक लटकाए जाने वाले दो कपड़े होते हैं जिनके छोर अलग होते हैं। जिसे पात्र कथा विस्तार में स्त्री बताने के लिए छोर से मोड़ लेते हैं (Namboothiri)। इसके नीचे धोती पहनी जाती है। कौपीन या कुप्पयम् लाल काली धारियों युक्त पूरी बांह का कुर्ता होता है। घुटने के नीचे पैरों पर चावल के आटे का घोल लगाया जाता है। इसके साथ उत्तरीय धारण किया जाता है जिसे दोनों हाथों में कोनों से पकड़ कर वे प्रस्तुति करते हैं।

ताडी वेश में पोयनख, माट्ट, उत्तरीय के साथ ऊपरी भाग में रोयेंदार कुर्ता पहनते हैं। जो हनुमान के लिए सफेद, बालि के लिए भूरा एवं सुग्रीव के लिए काला होता है। साथ में सुग्रीव की काली और हनुमान की सफेद पूंछ होती हैं। दोनों पात्रों की पूंछ अलग सामग्री से बनी होती हैं। ये पूंछ नारियल के पत्तों, कपास, सन की रस्सी के द्वारा बनाई जाती हैं।

विदूषक वेश में मात्र पोयनख, माट्ट, उत्तरीय पहना जाता है तथा जनेऊ धारण किया जाता है। वक्ष एवं आधे हाथों पर चावल के आटे का घोल लगाया जाता है जिन पर लाल रंग के गोले बनाए जाते हैं। विदूषक वेश के समान करी वेश में भी मात्र 'तट्ट' धारण किया जाता है। साथ में वक्ष पर 'कुत्तूमूल' अर्थात् उभरे हुए अस्थाई स्तन लगाए जाते हैं। पूरा शरीर मुख के समान काले रंग से रंगा जाता है।

सभी स्त्री पात्र एक समान वस्त्राभरण करते हैं। स्त्रियाँ चोली के साथ सफेद रंग की खूब झालर वाली वेष्टि एवं उत्तरीय पहनती हैं।

इ-आभूषण

कुटियाट्टम् में प्रयुक्त आभूषण पात्र को भव्यता प्रदान करते हैं। लकड़ी के बने ये आभूषण अभ्रक और सुनहरे रंग के कागज, छोटे शीशों, चमकीले नगों, विविध पुष्पों आदि से सजे होते हैं।

कुटियाट्टम् प्रयुक्त आभूषणों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है–शिराभूषण, कणार्भूषण, कण्ठाभूषण, हस्ताभूषण, उराभूषण एवं कटिभूषण।

शिराभूषण

ये विविध वेश के अनुसार होते हैं। किरीट, केशभारम्, कुळ्ळ, मकुट, कूटु, मयिलू मुटि, कुटुम, वासिकम्, पेटरि कुटियाट्टम् के शिराभूषण हैं।

किरीट–यह एक प्रकार का मुकुट होता है जो लकड़ी से बनाया जाता है। लकड़ी से दो कलश की आकृति तैयार की जाती है जिसे सुनहरे कागज, नग, शीशों से सजाया जाता है।

केशभारम्–यह 2 फिट व्यास वाला गोलाकार शिराभूषण है जिसका उपयोग किरीट के पीछे किया जाता है। जिस पर सजावट के लिए तेछी के फूल की मालाएँ एवं कपास का उपयोग किया जाता है।

केशभारम् एवं किरीट के संयुक्त रूप को 'केशभारम्-किरीट' कहते हैं। जो पच्च, कत्ति वेश के साथ ताडी वेश में बालि के लिए उपयोग होता है। जब 'केशभारम्-किरीट' में पीछे की ओर मोरपंख का वृत्त लगा दिया जाए तो वह जटायु का मुकुट होता है।

कुळ्ळ–यह सिर पर पहने जाने वाली 12 इंच व्यास वाली चक्राकार टोपी होती है।

मकुट–सिर पर धारण किए जाने वाले मुकुट के विविध प्रकार होते हैं। यह शलाका एवं रस्सियों से बनाया जाता है।

कुळ्ळ एवं मकुट का संयुक्त उपयोग कुछ भेद के साथ हनुमान, सुग्रीव, शूर्पनखा एवं मन्त्रांक के भ्रान्तक के शिराभूषण के रूप में किया जाता है। हनुमान के लिए मकुट को कपास से ढका जाता है। सुग्रीव का मकुट पटसन का रस्सियों से ढका जाता है। शूर्पनखा का मकुट एक प्रकार की घास एवं फूलों से ढका होता है। मन्त्रांक के भ्रान्तक का मकुट ताड़ के पत्ते के रेशों से ढका होता है।

कूटु–स्त्री पात्रों द्वारा धारण किया जाने वाला मुकुट है 'कूटु' जो सुपारी के पत्तों के नीचे के सफेद छिलकों से बनी कोणाकार टोपी है जिसे रेशम के कपड़े से ढका जाता है। उस पर चाँदी का एक नागफन लगता है। उसमें नीचे की ओर क्रम में चाँदी के फूल, तेच्चिप्पूवु आदि की मालाएँ लगाई जाती हैं।

मयिलू मुटि–जाम्वान के लिए प्रयुक्त शिराभूषण है 'मयिलू मुटि'। पटसन की रस्सियों को सिर पर मुकुट के समान बाँधा जाता है। आगे की रस्सियों को केश के रूप में पीछे लटका देते हैं।

कुटुम–विदूषक का शिराभरण 'कुटुम' कहलाता है। यह त्रिकोणीय टोपी होती है जिस पर लाल काले रंग के टुकड़े लगे होते हैं। इसमें एक छड़ी बनाई जाती है उसमें से ऊन की डोर लटकती है।

वासिकम्–यह एक प्रकार का 'किरीट' है जिसे 'पीलिप्पट्टम्' अर्थात् काले कपड़े से लपेटी हुई रस्सी के ऊपर शिर पर बांधते हैं। यह

अर्धचन्द्राकार होता है एवं लकड़ी का बना होता है जिस पर सुनहरी कागज और छोटे शीशे लगे होते हैं।

पणक्केट्टु—यह मोरपंख के पंखे के समान होता है जिसे सुपारी के डंठल को काट कर उस पर मोरपंख को लगाकर बनाया जाता है। इसे वासिकम् के ऊपर डोरी की मदद से बाँधा जाता है। राम, लक्ष्मण आदि पात्रों के शिराभूषण में यह देखा जा सकता है।

पेटरि—पटसन की रस्सियों को काला कर के बनाए जाने वाले केश को 'पेटरि' कहते हैं। विविध वेशों में पेटरि का उपयोग किया जाता है।

कर्णाभूषण

कानों के मूलतया दो आभूषण होते हैं। 'कुण्डल' एवं 'चेविप्पुवु'।

चेविप्पुवु—यह गुलाब के जितना बड़ा लकड़ी से निर्मित आभूषण है। इसे कान के ऊपर रखा जाता है।

कुण्डल—यह पात्रानुसार विविध प्रकार के होते हैं। नायक का कुण्डल लकड़ी से बना नारियल की गरि के आधे टुकड़े के समान होता है। मन्त्रांकम् के वसन्तक का कुण्डल सप्तछद की लकड़ी से बना मुर्गी के अंडे के समान होता है तथा भ्रांतक का ताड़ के पत्ते से बना चूड़ी के समान होता है जिसमें लाल काले कपड़े के टुकड़े बंधे होते हैं। हनुमान का कुण्डल कपास का होता है। मत्तविलास के कपाली का कुण्डल तेछिपु के गुच्छे से बना गोलाकार गेंद समान होता है। शूर्पनखा का कुण्डल भ्रांतक के समान ही चूड़ी नुमा होता है परन्तु यह सुपारी या नारियल के पत्ते के डंठल से बना होता है।

कण्ठाभूषण

पोषम्पु—यह लकड़ी का हार होता है जिसमें नीचे की ओर मोती की माला लगी होती हैं। इसे सभी पुरुष एवं स्त्री पात्र धारण करते हैं।

मारमाला—यह तेछि के फूलों से निर्मित माला होती है। जिसके छोर अलग होते हैं। यह पुरुष पात्रों द्वारा धारण की जाती है।

हस्ताभूषण

मुख्य हस्ताभूषण हैं—तोलवल, कटक, वळा, नख।

तोलवल—यह भुजा पर पहना जाने वाला आभूषण है। पुरुष व स्त्री पात्रों द्वारा धारण किया जाता है परन्तु दानों के तोलवल में कुछ अन्तर होता है।

कटक—इसे मणिबन्ध पर धारण किया जाता है। जिसमें छोटे शीशों से फूल की आकृति बनी होती है।

वळा—यह एक प्रकार की चूड़ी होती है जिसमें एक साथ तीन चूड़ियों की आकृति होती है तथा उनके ऊपर छोटे शीशों से फूल की आकृति बनी होती है।

ये आभूषण लकड़ी के बने होते हैं जिन्हें सुनहरे कागज व अभ्रक से सजाया जाता है।

नख—अंगुलियों पर नाखूनों के स्थान पर नुकीले 'नख' धारण किए जाते हैं। ये चाँदी की अंगूठियों के साथ बने होते हैं।

उराभूषण

एक मात्र उराभूषण है 'छन्नवुरम्'। यह लकड़ी के 30-40 टुकड़ों को एक साथ क्रॉस की आकृति में पिरोया जाता है।

कटिभूषण

कटि का आभरण है 'कटिसूत्र' जिसमें ऊपर की ओर व्याल अर्थात् शेर की मुखाकृति बनी होती है और उसमें नीचे की ओर लकड़ी के टुकड़ों की लड़ियाँ लटकती हैं जो एक कपड़े पर सिली रहती हैं। इसे पुरुष पात्र धारण करते हैं। स्त्रियों का कटिभूषण भी लकड़ी के टुकड़ों को पिरोकर बनाया जाता है।

इन आभूषणों के अतिरिक्त दन्ताभूषण का भी उपयोग कुटियाट्टम् में किया जाता है जिसे 'द्रंष्ट' कहते हैं। यह शंख से बना दाँत होता है जो रावण, बालि जैसे पात्रों के लिए उपयुक्त है।

ई-पुस्त

आहार्य में वेशाभरण के अतिरिक्त पुस्त का भी समान स्थान है। पुस्त के अन्तर्गत नाटक में उपयुक्त सभी प्रकार की आवश्यक वस्तुएँ आती हैं। कुटियाट्टम् में पुस्त बहुत सामान्य होता है। मंच पर रखा दीप, पात्र के लिए रखी लकड़ी की तिपाई, नांग्यार महिला के लिए मंच के एक आर बिछी दरी, मिळावु का बक्सा जिसे 'मिळावन' कहते हैं, पात्रों द्वारा धारण किए जाने वाले आयुध-तलवार, गदा, दण्ड आदि पुस्त के अन्तर्गत आते हैं। 'परक्कुक कूत्तु' (जिसका प्रदर्शन 'नागानन्द' में किया जाता है) में मुख्य मंच के सामने एक अन्य मंच का निर्माण किया जाता है यह भी कुटियाट्टम् में प्रयुक्त पुस्त का अंग है (Kaladharan 22-23)। इस परम्परा में प्रयुक्त आयुध सप्तछद की लकड़ी, डाली व तना एवं चावल के आटे के उपयोग से तैयार किए जाते हैं। तिपाई, मिळावन भी लकड़ी से निर्मित होते हैं।

कुटियाट्टम् की मंच सज्जा में नारियल, केला, सुपारी के फल, तने, डाली, चावल के धान आदि का प्रयोग किया जाता है (चाक्यार 37)।

उपसंहार

कुटियाट्टम् के आहार्य में विविध प्रकार के मुख सज्जा, वेश विन्यास, आभूषण एवं पुस्त का उपयोग किया जाता है। मुख सज्जा में प्रयुक्त रंग प्राकृतिक होते हैं जो खनिज एवं खाद्य पदार्थ से बने होते हैं। इन खनिज का उपयोग शोधन के उपरान्त एक निश्चित मात्रा में घी के साथ किया जाता है जिससे त्वचा को कोई हानि नहीं होती। आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी कुटियाट्टम् की मुखसज्जा में प्रयुक्त खनिज शोधन प्रक्रिया के उपरान्त त्वचा सम्बन्धी सम्स्याओं में कारगर बताए गए हैं। पिसी हल्दी एवं चावल के आटे के घोल का उपयोग भी इस विधा में किया जाता है। साथ में मुख

सज्जा आदि में नारियल का तेल व गाय के घी का उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार हल्दी, चावल का घोल एवं घी व नारिलय तेल भी त्वचा के लिए अच्छे पदार्थ हैं।

केरल प्रांत में पाए जाने वाले पेड़ों की लकड़ी, फल, फूल, पत्ते जैसे नारियल, सुपारी, सप्दछद, पटसन, कपास, तेछिपु, चुण्डुप्पु के साथ शंख, मोरपंख का उपयोग कुटियाट्टम् के आहार्य में दृष्टिगोचर होता है।

कुटियाट्टम् का आहार्य सुन्दर ही नहीं अपितु केरल में प्राप्त पेड़-पौधे-पुष्प-खाद्य सामग्री आदि की जानकारी देने वाला भी है जो कुटियाट्टम् के आहार्य में प्रकृति के योगदान को प्रदर्शित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वात्स्यायन, कपिला, पारंपरिक भारतीय रंगमंचः अनंत धाराएँ, अनुवाद बदिउज्जम,. नेशनल बुक ट्रस्ट, प्रथम संस्करण, 1995, पृ. 13-26
2. चाक्यार, मणि माधव, 'संज्ञा पंकरण', नाट्यकल्पद्रुम, अनुवाद पी. के. गोविन्दन नाम्ब्यार, संगीत नाटक अकादमी, 1996, पृ. 55-74
3. चाक्यार, मणि माधव, आभर्याभिनय नाट्यकल्पद्रुम. अनुवाद पी. के. गोविन्दन नाम्ब्यार, संगीत नाटक अकादमी, 1996, पृ. 37-43
4. Somdas, Margi and Ammanur Kochukottan Chakyar. "Aharya : Makeup and Costume". Sangeet Natak. Vol. 111-114, 1994, pp. 123-126
5. Gopalkrishnan, Sudha. "Aesthetic Tradition". Kutiyattam The Heritage Theatre of India. Niyogi Books, 2011, pp.73-85
6. Gopalkrishnan, Sudha. "Tradition in theatre". Kutiyattam The Heritage Theatre of India. Niyogi Books, 2011, pp.17-31
7. Kaladharan, V.. Kutiyattam :Symphony of Dance, Theatre and Music. Kerala Kalamandalam, First Edition, 2007, pp.09-23
8. Jose, Jenily. "Kathakali : Revival of a narrative". Vidhyayana an International Multidisciplinary Peer Reviewed E-Journal. Vol. 8, Special Issue-4, February 2023, pp.01-10 https://www.vidhyayanaejournal.org/journal/article/view/612
9. Rawat, Garima. et al. "A Review on Hartala (Orpiment) in Classical Ancient text of Rasa Shastra". Scholars international journal of traditional and complementary medicine, 07.06.2022, pp. 84-95 DOI.org (Crossref) https://doi.org 10.36348/sijtcm.2022.v05i05.001
10. Patel, Asma. et al. "A conceptual Review on Hingula (Cinnabar- HgS)". International Journal of Ayurveda and Pharma Research, Vol. 07, Issue 06, June 2019, pp. 32-39 https://ijapr.in/index.php/ijapr/article/view/1237/
11. Namboothiri, Shivan. Lecture on Kutiyattam at Faculty of Performing Arts, BHU, Varanasi. 31 Aug. 2019